# Sri Naramada Stotram – Skanda Puranam

## ॥ श्रीनर्मदा स्तोत्रं - स्कन्द पुराणम् ॥

The following is a rare hymn on **Sri Narmada Devi** (River) by **Sage Vyasa** as found in **Skanda Puranam**, **Reva Khanda**, **Chapter 97** (titled **Vyasa Tirtha Mahatmya Varnanam**).

The phalashruti mentions that **Sage Vyasa**, **Lord Shiva** and **Devi Narmada** are immensely pleased with one who chants this hymn with purity of mind after extirpation of lust and anger. Lord Vyasa mentions that neither he, nor **Brahma** nor **Saraswati/Brihaspati** is capable of deciphering the greatness of **Devi Narmada**.

श्रीव्यास उवाच -

जय भगवती देवी नमो वरदे जय पाप विनाशिनी बहु फलदे ।
जय शुम्भ निशुम्भ कपाल धरे प्रणमामि तु देव नरा ऽ र्त्ति हरे ॥ १ ॥

जय चन्द्र दिवाकर नेत्र धरे जय पावक भूषित वक्त्र वरे ।
जय भैरव देह निलीन परे जय अन्धक रक्त विशोष करे ॥ २ ॥

जय महिष विमर्द्दिनी शूलकरे जय लोक समस्त पाप हरे ।
जय देवी पितामह राम नते जय भास्कर शक्र शिरोऽव नते ॥ ३ ॥

जय षण्मुख सायुध ईश नुते जय सागर गामिनी शम्भु नुते ।
जय दुःख दरिद्र विनाश करे जय पुत्र कलत्र विवृद्धि करे ॥ ४ ॥

जय देवी समस्त शरीर धरे जय नाक विदर्शिनी दुःख हरे ।
जय व्याधि विनाशिनी मोक्ष करे जय वाञ्छित दायिनी सिद्ध वरे ॥ ५ ॥

## ॥ फलश्रुतिः ॥

एतद् व्यास कृतं स्तोत्रं यः पठेच् छिव सन्निधौ ।
गृहे वा शुद्ध भावेन काम क्रोध विवर्जितः ॥ ६ ॥

तस्य व्यासो भवेत् प्रीतः प्रीतश् च वृषवाहनः ।
प्रीता स्यान् नर्मदा देवी सर्व पाप क्षयङ्करी ॥ ७ ॥

न ते यान्ति समालोकं यैः स्तुता भुवि नर्मदा ।
पितामहो ऽ पि मुह्येत देवी त्वद् गुण कीर्तनात् ॥ ८ ।

वाक्पतिर् नैव ते वक्तुं स्वरूपं वेद नर्मदे ।
कथं गुणानहं देवी त्वदीयाञ् ज्ञातुमुत्सहे ॥ ९ ॥

॥ इति श्री स्कान्दे महापुराणे रेवा खण्डे श्रीव्यास कृत
श्रीनर्मदा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥